© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 9 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

वर्तमान परिदृश्य में स्वच्छता अभियान : सर्वेक्षणात्मक मूल्यांकन

डॉ0 नीलम सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा संकाय
हण्डिया पी0जी0 कालेज,
हण्डिया, इलाहाबाद (उ0प्र0)
सुरेश कुमार सिंह
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय,
जौनपुर

सारांश– आज विकासशील देशों में स्वच्छता व स्वास्थ्य की समस्या अति ज्वलंत है। ये समस्यायें हमारे पर्यावरण पर अपना सीधा प्रभाव डाल रही है। जिसके कारण संक्रमित रोगों की संख्या बढ़ी है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में अपना दूसरा स्थान रखता है और शहरों एवं कस्बों में लगभग 31.2 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। वर्तमान में ग्रामीण जनता अपने आजीविका के लिए औद्योगीकरण एवं निजीकरण के लिए शहरों में पलायन कर रही है जिसका सीधा प्रभाव स्वच्छता एवं स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। इस स्थिति से निपटने हेतु गैर सरकार संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, सरकारी योजनायें व नीतियाँ अपना प्रभावी कार्य करने का प्रयास कर रहा है। इसी के तहत विश्व स्वास्थ्य संगठन, वॉटर एड, यूनीसेफ जैसी संस्थायें भारत में स्वच्छता के स्तर को प्रबल बनाने में अपना सहयोग दे रही है, ताकि हमारी स्थिति पहले से बेहतर हो सकें और एक स्वच्छ व स्वस्थ भारत का निर्माण संभव हो सकें। स्वच्छता अभियान को जन–जागरूक एवं शत–प्रतिशत लागू करने में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते हैं– गाँवों में खुले में शौचालय का प्रयोग करने एवं घर के शौचालयों के प्रयोग न करने वाले पर कड़ी कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए। पान, गुटका, बीडी, सिगरेट जैसे मादक पदार्थों पर रोक लगानी चाहिए एवं इसको बेचने एवं खाने वाले पर जुर्माना का प्रावधान करना चाहिए जिससे शारीरिक प्रदूषण के साथ–साथ पर्यावरण एवं स्वच्छता पर पड़ने वाले प्रभाव पर रोक लगाया जा सकें। पेड़ कटान एवं पानी की बोरिंग पर रोक लगाना चाहिए एवं इसके उल्लंघन पर कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए। शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्वच्छता एवं पर्यावरण से सम्बन्धित बातों का समावेश, सेमिनार, कान्फ्रेंस, जन–जागरूकता कार्यक्रम एवं समय–समय पर पोस्टर के माध्यम से स्वच्छता एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास करना चाहिए। एक स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज, प्रदेश एवं देश की परिकल्पना हम इंसानों के हाथ में है जिसे पूर्णता करने में हम और आप अपना हाथ बड़ा सकते हैं।

की–वर्ड– स्वच्छता अभियान, सर्वेक्षण, मूल्यांकन, वर्तमान

प्रस्तावना–

देवता जहाँ रहते हैं वहाँ सफाई, स्वच्छता, शुचिता, पवित्रता, सुगन्ध, सौन्दर्य और निर्मलता प्रमुख रूप से रहती हैं। यह बातें जहाँ पर होंगी स्वभावतया वहाँ प्रसन्नता, निरालस्यता, प्रेम, सद्भाव, सहयोग, कर्मठता, सहिष्णुता, उदारता आदि गुण भी होने चाहिए। जहाँ यह गुण व्यापक मात्रा में विद्यमान होंगे वहाँ सुख शांन्ति, संतोष, समृद्धि और सम्पन्नता का होना भी अनिवार्य है। हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन का उद्देश्य भी तो यही है कि हम सुखी बनें, शांतिपूर्वक जीवन जियें और किसी का अभाव न रहें।

स्वच्छता मनुष्य जीवन और मानवीय सभ्यता का अविभाज्य अंग हैं। हिन्दू धर्म ही नहीं, हर एक धर्म में स्वच्छता की ओर निर्देश करने वाले आचार वर्णित हैं। भारत प्राचीन काल से ही ऋषियों, मुनियों और मनीषियों की धरती रही है। इसलिए भारतीय संस्कृति विश्व के आंगन में अपनी श्रेष्ठताओं और महानताओं के लिए प्रसिद्ध रही है। इस कारण हमारे ऋषियों और मनीषियों ने मानव जीवन को सुखी बनाने के लिये अनेक उपाय किए है जिनमें स्वच्छता का भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है।

गाँधी जी का मत था कि– ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।'' बापू के जीवन का संदेश था कि ''वह जो सचमुच में भीतर से स्वच्छ है, वह अस्वच्छ बनकर नहीं रह सकता''। गाँधी जी ने किसी भी सभ्य और विकसित मानव समाज के लिए स्वच्छता के उच्च मानदंड की आवश्यकता को समझा। उनमें यह समझ पश्चिमी समाज में उनके पारम्परिक मेलजोल और अनुभव से विकसित हुई। अपने दक्षिण अफ्रीका के दिनों से लेकर भरत तक वह अपने पूरे जीवन काल में निरन्तर बिना थके स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करते रहें। गाँधी जी के लिए स्वच्छता एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा था।

स्वच्छता ऐसी चीज है जो अनुकरण सी सीखी जाती है। यह एक अति महत्त्वपूर्ण पहलू है कि व्यक्ति का सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वच्छता का स्तर भी अलग–अलग होता हैं। एक बार **पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी** ने कहा कि ''जो वंचित तथा गरीब है उनसे पर्यावरण सुरक्षा की अपील कैसे की जा सकती है। जो अपने लोग अपने जीवन के मूलभूत साधनों की प्राप्ति की सही तरीके से नहीं कर पाते उनसे वास्तव में गन्दगी के कारकों को रोकने की अपेक्षा नहीं की जा सकती।''

स्वच्छता को परिभाषित करते हुए **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)**[प] ने कहा गया है कि–

1. लोगों को स्वच्छता के लिए शौचालयों व दूषित पानी को स्वयं स्वच्छ रखने के साधनों व उपायों को करने की आवश्यकता ही स्वच्छता है।
2. स्वच्छता का सामान्य आशय उन प्रावधानों, सुविधाओं सेवाओं से है, जो मानव से मल–मूत्र और कचरे आदि का सुरक्षित निस्तारण करते हैं।
3. बहुत से व्यवसायी लोगों ने स्वच्छता को एक बहुत बड़ा विचार बताते हुए इसमें मानव के मल–मूत्र, कचरे आदि को सुरक्षित संग्रहण, भण्डारण, उपचार निस्तारण तथा पुनः प्रयोग करने पर बल दिया है।
4. ठोस कचरे का पुनः प्रयोग चक्रण का प्रबन्धन करना ही स्वच्छता है।
5. पारिवारिक दूषित जल की निकासी और निस्तारण एवं पुनः प्रयोग के उपाय करना ही स्वच्छता है।
6. तूफान के पानी की निकासी व्यवस्था, औद्योगिक कचरा, खतरनाक कचरा जैसे रासायनिक कचरा जैसे रासायनिक कचरा, रेडियोएक्टिव कचरा और अस्पतालों का कचरा आदि का संग्रहण व निस्तारण करना ही स्वच्छता है।

वर्तमान समय में स्वच्छता जैसी समस्याएँ वैश्विक स्तर पर बढ़ती जा रही है। **मंगल एवं झाझड़िया (2017)**[पप] ने ***अपने अध्ययन में इंगित किया कि*** पर्यावरणीय व पारिस्थितिकीय परिवर्तनों के कारण उत्पन्न पर्यावरण संकट आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी मनुष्य की विकासीय प्रक्रियाओं का परिणम है। वास्तव में यदि एक तरफ सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तकनीकी एवं प्रौद्योगिकीय विकास हुये हैं तो दूसरी तरफ विकट पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय समस्याएँ भी उत्पन्न हुई है।

अब उचित समय आ गया है कि हम सचेत हो जायें। हमारे देश में भी पर्यावरण असंतुलन व प्रदूषण से निपटने कि लिए अनेक जन आन्दोलन चलाये गये– जैसे सुन्दर लाल बहुगुणा का चिपको आन्दोलन, मेधापाटेकर का नर्मदा बचाओ आन्दोलन, आन्ध्र प्रदेश में शान्ती घाटी आन्दोलन, गुजरात में स्वामी बल्लभ का वृक्ष कटाई के विरूद्ध आन्दोलन आदि। सरकार की तरफ से अनेक मास्टर प्लान लागू किये गये है व समितियाँ गठित की गयी है। उद्योगों तथा फैक्ट्रियों को रिहायशी क्षेत्रों से दूर स्थानान्तरित करने के लिए आदेश दिये गये है। राष्ट्रीय स्तर के साथ–साथ प्रादेशिक स्तर पर भी उपाय किये जा रहे हैं। **मोदी, नृपेन्द्र प्रसाद (2016)**[पपप] ने अध्ययन के परिणामस्वरूप अपने सुझाव दिये कि प्रकृति पर विजय की बात सोचना मूखर्ता है। पर्यावरण सुरक्षा के लिए जनान्दोलन का सहारा लिया जा रहा है। राजस्थान में विश्नोई समाज द्वारा पेड़ बचाने के लिए उनसे लिपट जाना, मसूरी में चूना पत्थर खदानों पर रोक, केरल में साइलेंट वैली और चेलियार नदी आन्दोलन, कर्नाटक में अप्पिको आन्दोलन, गोवा में मछुआरों का

आन्दोलन, मध्य प्रदेश में मिट्टी बचाओ आन्दोलन आदि। सरकार और मानवों की सच्ची इच्छा शक्ति के संयुक्त प्रयास से पर्यावरण संरक्षण की उम्मीद की जा सकती है।

पूर्व अध्ययनों से पता चलता है कि स्वच्छता का हमारे जीवन में कितना महत्त्वपूर्ण है। **पुष्पम्, सद्गुरु (2016)**[पअ] ने अध्ययन के परिणामस्वरूप बताया कि आखिर क्यों हमारे जनमानस को सफाई जैसी चीज के लिए प्रोत्साहित करना पड़ रहा है। जबकि यह स्वतः करने वाली चीज है। इसके पीछे व्यक्तिगत सोच तथा प्रेरणा काम करती है। प्रायः अक्सर यह देखा गया है कि कुछ आलस्य की वजह से सफाई पर ध्यान नहीं दे पाते। कुछ लोग जागरूकता की कमी के कारण ऐसा करते है और कुछ झूठी शान के लिये भी करते है। वर्तमान समय में न केवल देश वरन् वैश्विक स्तर पर भी यह बात मान ली गयी है कि सफाई हमारे स्वयं के लिये, समाज के लिये तथा सम्पूर्ण विश्व के लिये महत्त्वपूर्ण है। इसके लिए सम्पूर्ण जनमानस को गम्भीर होना ही पड़ेगा। साथ ही जहाँ भी यदि जारूकता के स्तर में कमी आये तो फौरन सरकार तथा सिविल सोसाइटी को इसके लिये सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये। हम सच्चे अर्थों में भारत को तभी स्वच्छ एवं विकसित बना सकते हैं जब हम सभी इस बात का प्रण करें कि स्वच्छता की जिम्मेदारी स्वयं उनकी है।

पपलीराम एवं सीमतवाल, नरेन्द्र (2017)[अ] ने अध्ययन में इंगित किया कि सरकार को ऐसे कानून बनाने चाहिए, जिससे घरों, अस्पतालों एवं अन्य प्रतिष्ठानों से जो कचरा निकलता है उसे कूड़ा संग्रहण केन्द्र पर एकत्रित किया जाय तथा उचित जगह पर इसके निस्तारण की व्यवस्था होनी चाहिए।

जिसमें **श्याम, उमा एवं वन्दना (2015)**[अप] **ने** अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी में अपने लेख ***''स्वच्छ भारत– भविष्य के लिए परिदृश्य''*** नामक विषय में शक्ति, कमजोरी, मौका एवं आशंका को विश्लेषित करते हुए कहा कि कोई भी सरकार चाहे जितनी भी योजनायें शुरू करें, उसको सफल बनाने के लिए जनता की सहभागिता बहुत जरूरी है, जैसा आप जानते हैं– ''स्वच्छता भगवान की ओर अगला कदम है''। यह कदम हर एक व्यक्ति को उठाना चाहिए ताकि पूरे देश की आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से विकास हो सकें, दृढ़ इच्छा– शक्ति के साथ विविधता में एकता की विशेषता रखने वाले भारत देश को स्वच्छ भारत की ओर ले जाना हम सबका कर्त्तव्य है, हम इसके लिए जरूर कोशिश करेंगे।

जैन, चन्द्र कुमार (2016)[अपप] ने **अपने** नामक लेख में अपने कहा कि साफ–सफाई के मुद्दे को अब वास्तव में गम्भीरता से लेने का वक्त आ गया है। वैसे, छोटे–बड़े शहरों में इस अभियान का असर तो दिखने लगा है। लोग अब कचरे को लेकर अपनी सोच का कचरा साफ करते दीख रहे हैं। कभी अपने घर के सामने या पड़ोसी के द्वार पर घर का कचरा फेंक आने से गुरेज न करने वाले भी आहिस्ता– आहिस्ता ही सही, अपने आदत बलने के मूड में पेश आ रहे हैं। ऐसा पहले देखने में नहीं आता था। इससे भला कौन इंकार कर सकता है कि लोग जा तो रहे हैं। लेकिन, साझा जिम्मेदारी के गहरे अहसास के बगैर बात नहीं बनेगी। **जायसवाल, प्रिया (2016)**[अपपप] ने **प्रदेश में सही राह पर स्वच्छता की मुहिम** नामक लेख में बताया कि – स्वच्छ भारत अभियान सही मायनों में तभी सफल हो पाएगा जब भारत में कोई भी व्यक्ति खुले में शौच नहीं जाएगा, पूरे देश में आदर्श शौचालय होंगे, मल ढोने की वर्षो पुरानी कुप्रथा समाप्त होगी। जब हमारा तन–मन स्वच्छ रखेंगे तब बनेगा गाँधी जी के सपनों का स्वच्छ भारत, तब हम उनकी नजरों में नजरें डालकर जवाब दे पाएंगे। तो आइए हम सक प्रण लेते है। कि हम अपने घरों को और आसपास स्वच्छता रखने का पुनः प्रयास करेंगे और अपने राज्य को स्वच्छ राज्य बनाएगें। **खान एवं कुमार (2016)**[पग] ने अध्ययन में इंगित किया कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छ भारत अभियान के परिणामस्वरूप 90 प्रतिशत उपलब्ध लोगों के पास शौचालय सुविधा है और 10 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय सुविधा नहीं है। किन्तु शौचालय होने के बावजूद कुछ लोग आदत की वजह से और कुछ लोग परिवार में अधिक सदस्यों की वजह से खुले में शौच के लिए जाते हैं।

बतरा, भारती एवं सिंह, भूपेन्द्र (2017)[ग] ने ***अपने अध्ययन में इंगित किया कि*** स्वच्छ भारत अभियान जो कि सफाई के प्रति देश में जागरूकता फैलाने के लिए चलाया गया है वह युवाओं में जागरूकता लाने में सक्रिय रहा है। अभियाना के प्रचार–प्रसार में टेलीविजन की भूमिका सबसे अहम पायी गईं अभियान से जुड़े विज्ञापनों ने टेलिविजन के माध्यम से युवाओं में सफाई के प्रति जागरूकता फैलाने में अहम् भूमिका निभाई है। न्यूमीडिया व इंटरनेट का भी इसमें योगदान रहा है।

निष्कर्ष–

आज विकासशील देशों में स्वच्छता व स्वास्थ्य की समस्या अति ज्वलंत है। ये समस्यायें हमारे पर्यावरण पर अपना सीधा प्रभाव डाल रही है। जिसके कारण संक्रमित रोगों की संख्या बढ़ी है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में अपना दूसरा स्थान रखता है और शहरों एवं कस्बों में लगभग 31.2 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। वर्तमान में ग्रामीण जनता अपने आजीविका के लिए औद्योगीकरण एवं निजीकरण के लिए शहरों में पलायन कर रही है जिसका सीधा प्रभाव स्वच्छता एवं स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। इस स्थिति से निपटने हेतु गैर सरकार संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, सरकारी योजनायें व नीतियाँ अपना प्रभावी कार्य करने का प्रयास कर रहा है। इसी के तहत विश्व स्वास्थ्य संगठन, वॉटर एड, युनीसेफ जैसी संस्थायें भारत में स्वच्छता के स्तर को प्रबल बनाने में अपना सहयोग दे रही है, ताकि हमारी स्थिति पहले से बेहतर हो सकें और एक स्वच्छ व स्वस्थ भारत का निर्माण संभव हो सकें।

सुझाव–

स्वच्छता अभियान को जन–जागरूक एवं शत–प्रतिशत लागू करने में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते हैं–

1. सरकार द्वारा ग्रामीण लोगों के पलायन को रोकने के लिए ग्रामीण स्तर पर आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए शिक्षा, अस्पताल, सड़क, औद्योगीकरण एवं कृषि को बढ़ावा देना चाहिए।
2. शहरों में कुड़े को उठाने एवं उसका निस्तारण करने की योजना को शत– प्रतिशत लागू करना चाहिए।
3. शहरों में लगे छोटे–बड़े उद्योगों को जिससे स्वच्छता पर प्रभाव पड़े उसे शहरों से अलग जगहों पर लगवाने एवं उन उद्योगों का समय–समय पर जाँच होनी चाहिए जिससे पर्यावरण कम से कम प्रभावित हो सकें।
4. गाँवों में खुले में शौचालय का प्रयोग करने एवं घर के शौचालयों के प्रयोग न करने वाले पर कड़ी कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए।
5. पान, गुटका, बीडी, सिगरेट जैसे मादक पदार्थों पर रोक लगानी चाहिए एवं इसको बेचने एवं खाने वाले पर जुर्माना का प्रावधान करना चाहिए जिससे शारीरिक प्रदूषण के साथ–साथ पर्यावरण एवं स्वच्छता पर पड़ने वाले प्रभाव पर रोक लगाया जा सकें।
6. पेड़ कटान एवं पानी की बोरिंग पर रोक लगाना चाहिए एवं इसके उल्लंघन पर कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए।
7. शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्वच्छता एवं पर्यावरण से सम्बन्धित बातों का समावेश, सेमिनार, कान्फ्रेंस, जन–जागरूकता कार्यक्रम एवं समय–समय पर पोस्टर के माध्यम से स्वच्छता एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास करना चाहिए।
8. टेलीविजन एवं संचार माध्यम पर स्वच्छता एवं पर्यावरण से सम्बन्धित बातों का प्रसारण करना चाहिए जिससे जनता इसके प्रति जागरूक हो सकें।
9. एक स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज, प्रदेश एवं देश की परिकल्पना हम इंसानों के हाथ में है जिसे पूर्णता करने में हम और आप अपना हाथ बड़ा सकते हैं।

जिस प्रकार पेट भरने के लिए शुद्ध भोजन, जीने के लिए शुद्ध वायु, कष्टों के निवारण के लिए भगवान की पूजा, आर्थिक संसाधनों को जुटाने के लिए कर्म उसी प्रकार स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता को अपनाना हमारा नैतिक जिम्मेदारी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[i] रिपोर्ट ऑफ वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन साइटेड इन पपलीराम एवं नरेन्द्र, सीमतवाल (2017). स्वच्छ भारत में अलवर जिले की भूमिका, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट, 2(6), पृ0 803–808

[ii] हेमन्त मंगल एवं बंशीधर झाझड़िया (2017). विकास एवं पर्यावरण ह्रास, चेतना, इण्टरनेशनल एजुकेशनल जर्नल, 3(2), 122–124

[iii] नृपेन्द्र प्रसाद मोदी (2016). मानव विकास और पर्यावरण, न्यू मैन इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिस्पिलनरी स्टडीज, 3(7), 57–61

[iv] सद्गुरु पुष्पम् (2016). सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन से संभव है स्वच्छ भारत, इण्टननेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइंस रिसर्च रिव्यू, 3(3), 4–7

[v] पपलीराम एवं नरेन्द्र, सीमतवाल (2017). स्वच्छ भारत में अलवर जिले की भूमिका, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट, 2(6), पृ0 803–808

[vi] श्याम, उमा एवं वन्दना (2015). ''स्वच्छ भारत– भविष्य के लिए परिदृश्य'', अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी, भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, नौ सेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला, तृक्काक्करा डाक घर, कोच्चि, 30 अक्टूबर 2015

[vii] चन्द्र कुमार जैन (2016). ''स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करते रहे गाँधी जी'', लेख, http://hindimedia.in/hygiene-awarness-were-gandhi/ Jan 25, 2016

[viii] प्रिया जायसवाल (2016). प्रदेश में सही राह पर स्वच्छता की मुहिम, आवरण कथा, मध्प्रदेश संदेश, अक्टूबर, 2016, पृ0 49–51

[ix] मोहम्मद खान एवं सर्वेश कुमार (2016). स्वच्छ भारत अभियान का ग्राम स्तरीय सूक्ष्म अध्ययन : ग्राम नरायनपुर, तहसील बीसलपुर, जनपद पीलीभीत के विशेष सन्दर्भ में, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन एण्ड रिसर्च, 1(8), 55–61

[x] भारती बतरा एवं भूपेन्द्र सिंह (2017). ''आपका कदम स्वच्छता की ओर– ''स्वच्छ भारत'' युवाओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता व अवबोधन का अध्ययन'', ग्लोबल ऐकेडमिक रिसर्च जर्नल, V(I), 61–72